

५३

सर्वेश्वर श्री कण्ठ
मातृकान्यास
शरंभेश्वर दीप
दानं बद्धति विधि



ASHA ARCHIVES

3516

अथ श्रीकलामास्तुत्यासः॥ ॥ अथ श्रीकलामास्तुत्यासः॥ वध्या
अस्ति॥ ॐ दक्षिणमूर्तिं कथय ॥ मूर्द्धि॥ ॐ गायत्री च न्यसे ॥ मूर्ध
ॐ हो अर्द्धाद्रिजाहनादवेगाय ॥ हृदय ॥ ॐ हलावी जाय ॥ गुह्य ॥ स्व
नानुभक्तय ॥ पादो ॥ सर्वसिद्धय उपविनियोगः॥ कृताश्रुति॥ कांमि
त्यादिषु धर्धनकनषडभ्यासः॥ ॥ गतात्यासः॥ ॐ ह्रीं अथ श्रीकलामा
भपुल्लुदनीत्यां ॥ ललाटा ॥ ॐ ह्रीं ओं अननभवीन उयात्यां ॥ खाला ॥
ॐ ह्रीं ओं सुखी सा लमलीत्यां ॥ उवमिरवा ॥ ॐ ह्रीं ओं मूर्द्धि कलामा ललादि
त्यां ॥ खवमिरवा ॥ ॐ ह्रीं ॐ अमभवा वरुलादीत्यां ॥ उवक्रसमनसा ॥ ॐ ह्रीं

१ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ अथ ध्यानं ॥ नदीपयानपद्धतिविधितिः
स्वाहा ॥ ॥ ग्राथो जलरक्षाधनं ॥ गिराचमनं ॥ ॐ क्रौं आत्मतत्त्वास्वाहा
॥ ॐ क्रौं विश्वातत्त्वास्वाहा ॥ ॐ क्रौं विवतत्त्वास्वाहा ॥ ॥ गतीसा
मान्मार्गस्थापनं ॥ ॐ आधनरक्षादित्याः ॥ पूजा ॥ रुद्रं मंचिसि
ल ॥ नमः लेखन ॥ अंकुशमूद्रा ॥ ॐ क्रौं गरगचक्रमूनयति ॥ ॥
ॐ वन्दनादरूपं ॥ प्रजरदनपूजाधनमूद्रा ॥ तालप्रयदिगवन्ध

नं॥ ॥तताद्यानपूजा॥ अर्घ्यजलनायूद॥ रुद्र॥ पूजा॥ ॐ दानदव
 तादिस्थानमः॥ पूनपूजा॥ ॐ नन्दिनः॥ ॐ महाकालाय॥ पूर्व॥ ॐ
 रुद्रिनः॥ ॐ गरुडाय॥ दक्षिण॥ ॐ वृषाय॥ ॐ स्कंदाय॥ उत्तर
 ॥ ॐ दक्षाय॥ ॐ वसुधाय॥ पश्चिम॥ ॐ दहल्ले॥ ॐ दानदवतादि
 स्थान॥ ॥ततास्वामनस्थापनं॥ ह्रीं मीमंस्वनहाया॥ रुद्र॥ धिया॥ ॐ
 पृथ्वीमनूवसिष्ठऋषिःसूतनकुन्दः कृमादिवता आसनापवसनवि

वीत्वरिमन्त्रः॥१॥

नियागः॥ पूजा॥ वध्याऋषिनाप॥ ॐ पृथ्वीत्वयाधृतालाकाद
 वीत्वंविष्णुनाधृता॥ त्वंचक्षानयमां रुद्रः पवित्रं कुरुवासनं॥ पूजा॥ ॐ पृथि
 वी॥ ॐ आध्वनः॥ ॐ विविचक्रः॥ ॐ विश्वः॥ ॐ माया
 णः॥ सर्वेषां आरूपां प्रार्थय॥ सिद्धिर्वीनासनापविष्ट॥ ॐ त्वा
 नं॥ ॥ अग्नादिवाक् सूर्यार्घ्य॥ ॥ गुननमस्त्वान॥ ॐ गुनूत्या॥ ॐ
 अखशुभशुलाकावति॥ ॥ततागुनासादनं॥ जला इतदगदिगविः

२० सर्वद्वारनिवासाय सांगाय सगद्याय मिनाजाय शुदर्शनाय ह्रीं रुद्र ॥ २

विचर्य ॥ ॐ ह्रीं रुद्र स्वाहा अमुत्राय रुद्र ॥ ॐ उपसर्पन्तु यदृता यदृताशु
विसंस्थिता ॥ यदृता विघ्नहर्ता न तनोष्यन्तु शिवास्तु ॥ विघ्नपिहावन
गलप ॥ ॥ रुद्र हस्तपादनतालपुत्रय ३ कृतिका रुद्र १० ॥ दशदि
विन्धनं ॐ १० ॥ ॥ त्रिनमस्त्वान ॥ ने गुनूत्या २ ॥ दश ॥ गंगारक्षसाय २ ॥
ॐ मूलं शनरुद्रनाय २ ॥ म १० ॥ तालपुत्रयदिवन्धनं ॥ रुद्र १० ॥ ॥
अग्निप्राकानक्षयवक्त्रहायक ॥ न ॥ ॥ प्राक्षायाम ॥ हंसः ॥ यं १६
काय ॥ न ६४ पूनक्ष ॥ वै १६ पिकाय ॥ ॥ तमारुगुदि ॥ मूलोधान ॥ ॥

सहस्रदलकमलमग्निलवणकिष्कापनायाय ॥ हंसः ॥ मनुष्य ॥ वामकुक्षिस्थितं
पापं पूनषं ककुलप्रयं ॥ वस्त्रहृत्पाणिनस्त्रं धर्तुं सुकुरु उदयं ॥ सूनापानं
दृष्टियुक्तं गुनूकल्पकठिदयं ॥ तत्संमर्जपदद्वंद्वमंगप्रयंगपातकं ॥ उप
पारकनामानं नक्षत्रं ॥ विलावनं ॥ खड्गचर्मधनं कुनं पापकुक्षीविवि
क्तय ॥ पापपूनषं विविक्तयः यं १६ खवनसा ॥ काय ॥ पापपूनषदहं वि
१० ॥ ॥ न ६४ पूनय ॥ पापपूनषसदहं रसमय ॥ वै ३२ पिकाय ॥ लला
तवन्दात्मा गुकावर्तुमयी ममृता हृदि निर्पात ॥ रसप्राच्यप्राक्षायामः

न्यासक्रमनावयवानिपाद्य॥ लै० १० दृष्टीकल्प

तथा प्राणप्रतिष्ठा॥ ॐ औं कीं
कीं हं सः सा हं शनरं धनप्राणाः सर्वेन्द्रियाक्षिण् हागप्यसुखं चिनेतिष्ठंतु स्वाहा
३॥ हृदिपुष्पान्॥ ॥ तथा मूलकण्ठादिन्यासः॥ ॐ अस्मिन् श्री शनरं धनं
लूवमनुस्य॥ हंता पुश्लि॥ ॐ वामदेवकप्रियं॥ शिनसि॥ ॐ अग्निजग
तीकुन्दसं॥ मूख॥ ॐ कालाग्निनूडादवताय॥ हृदि॥ ॐ खंवीजाय॥

॥ गुक्क॥ ॐ स्वाहाहाकथं॥ पादौ॥ ॐ अरिष्टसिद्धार्थजपविनिर्थागः॥
हंता पुश्लि॥ ॥ तथा कनकान्यासः॥ ॐ खं खं खं खं अगुष्टायां॥ ॐ प्रा
णगुहासिं रज्जुनी॥ ॐ सर्वेष्टां संहनक्षायमध्वमा॥ ॐ शनरं धनं लूवा
य अनामिका॥ ॐ पदिना जायकनिष्ठा॥ ॐ हं रं स्वाहाकनराल॥ जेवं
हृदयादि॥ ॥ तथा मारुकान्यासः॥ ॐ अस्मिन् श्री मारुकान्यासस्य॥ व
ध्वाजलिः॥ ॐ वृक्षा कप्रियं॥ शिनसि॥ ॐ गायत्रीकुन्दसं॥ मूख
॥ ॐ मनस्वरी मारुकादवताय॥ हृदि॥ ॐ हलावीजाय॥ गुक्का॥

ॐ स्वस्त्यः ॥ कथं ॥ पादो ॥ ॐ अवाककीलकाय ॥ सर्वा ॥ ॐ मम
 हृद्युद्धार्थ उपविनिधागः ॥ दत्तात्रेय ॥ ॥ तत्ताकनांगं न्यासः ॥ ॐ अं कै
 ॐ अं गुह्यायां ॥ ॐ ॐ च ॐ ॐ तर्जनी ॥ ॐ ॐ टं ॐ ॐ मध्यमायां ॥ ॐ ॐ तं ॐ ॐ
 अनामिका ॥ ॐ ॐ पं ॐ ॐ कनिष्ठा ॥ ॐ ॐ चं ॐ ॐ अः कनकल ॥ ॐ वं दद्यादि ॥
 ॐ ॐ नमः ॥ कपाल ॥ ॐ ॐ ॥ ॐ ॐ ॥ ॐ ॐ ॥ अवमिरवा ॥ ॐ ॐ ॥ खव
 मिरवा ॥ ॐ ॐ ॥ अवहसपन ॥ ॐ ॐ ॥ खवक्रसपन ॥ ॐ ॐ ॥ अवक्राघाल
 ॥ ॐ ॐ ॥ खवक्रासघाल ॥ ॐ ॐ ॥ अवहनाल ॥ ॐ ॐ ॥ धधूतुसि ॥ ॐ ॐ ॥
 ॥ काधूतुसि ॥ ॐ ॐ ॥ धधूवा ॥ ॐ ॐ ॥ काधूवा ॥ ॐ ॐ ॥ भादस ॥ ॐ ॐ ॥

॥ मधास ॥ ॥ ॐ ॐ ॥ अववाहा ॥ ॐ ॐ ॥ अववल्वा ॥ ॐ ॐ ॥ अवकाचला
 ॥ ॐ ॐ ॥ अवपचिंठहा ॥ ॐ ॐ ॥ अवपचिंठवा ॥ ॐ ॐ ॥ खववाहा ॥ ॐ ॐ
 ॥ खववल्वा ॥ ॐ ॐ ॥ खवकाचला ॥ ॐ ॐ ॥ खवपचिंठहा ॥ ॐ ॐ ॥
 खवपचिंठवाका ॥ ॐ ॐ ॥ अवकनचूकन ॥ ॐ ॐ ॥ अवपूति ॥ ॐ ॐ ॥
 ॥ अवगुंति ॥ ॐ ॐ ॥ अवगुनिपचिंठहा ॥ ॐ ॐ ॥ अवगुनिपचिंठवा
 का ॥ ॐ ॐ ॥ खवकाचूकन ॥ ॐ ॐ ॥ खवपूति ॥ ॐ ॐ ॥ खवगुंति ॥ ॐ ॐ
 ॥ खवगुनिपचिंठहा ॥ ॐ ॐ ॥ खवगुनिपचींवाका ॥ ॐ ॐ ॥ अववा
 का ॥ ॐ ॐ ॥ खववाका ॥ ॐ ॐ ॥ जलधू ॥ ॐ ॐ ॥ यदू ॥ ॐ ॐ ॥ वाथ

॥ॐ यै त्वगात्मनः॥ नूगल॥ॐ नै भू सगात्मनः॥ ऊव हसूनी॥ॐ लै मासा
 त्मनः॥ वव नि॥ॐ वै वदात्मनः॥ खव हसूनी॥ॐ हौ भू द्यात्मः॥
 नूगलं निस्प उव लाहारा पविं हत्वं॥ॐ पं मऊत्मेनः॥ नूगलं निस्प खव ला
 हात पविं हत्वं॥ॐ सं लुक्कात्मनः॥ नूगलं निस्प उव तुति पविं हत्वं॥ॐ हंप्रा
 क्षात्मनः॥ नूगलं निस्प खव तुति पविं हत्वात्वं॥ॐ लै जीवात्मनः॥ नूगलं
 निस्प पदुत्वं॥ॐ कं पनमात्मनः॥ नूगलं दूगुत्वं॥ॐ ति मागुका न्यासः॥ ॥
 हूगसाही कक्षादि मागुका न्यासः॥ मरुगसा मागुका कनाङ्गु कीयाय॥ ॥
 निस्पः

वध्या उरुलि ४

पूतः पा भक्तनमस्तु क्षमा सः॥ॐ अस्मही क्षनरुधनमस्तु सः॥ कना उरुलि॥ॐ
 सदा गिव अषयः॥ गिनरु॥ॐ वृहती कन्दसः॥ मुख॥ॐ क्षनरुधननायः॥
 ॥ हदि॥ॐ पुन ववीजायः॥ गुफ॥ॐ वैल कयः॥ पादथाः॥ॐ पदिना
 जायकीलकायः॥ सर्वा॥ॐ सर्व विद्यात्मान रविनिथागः॥ॐ कौं कौं हं जंगुहा
 थाः॥ॐ कौं कौं हं रकुनीया स्वाहा॥ॐ कौं कौं हं मध्यमाया वषट्॥ॐ कौं कौं हं
 अनामिकाया हं॥ॐ कौं कौं हं कनिष्ठाभ्यां वीषट्॥ॐ कौं कौं हं कनतल पृष्ठायां
 मध्याय रुद्र॥ प्रवृद्धयादी॥॥ॐ कौं कौं नमः॥ गिनसा॥ हं मुख॥ यै नै ठं ठं
 ननुथाः॥ स्फुन स्फुन ॥ कर्षुथाः॥ धौं धं ॥ गलुथाः॥ सिंजं रं ॥ नसाः॥ वीन रुद्र
 नमः॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

निमंजलाय ॥ ॐ ह्रीं स्वसि ॥ ॐ ॥ धूपपत्रममृतलेन ॥ कृपणं ॥ मूलं ह्रीं नरे नवस्य
पातं कृपयामि ॥ पूजा ॥ ॐ ॥ जं सूर्यमं सुलाय ॥ पातु पुनर्ही ॥ भैव आदि ही घटं
॥ ॐ धयित्वा पुनर्य ॥ मूलं ह्रीं नरे हव नरे नवस्य पातं पुनर्यामि ॥ ॐ ॥ वृक्षा
लुखलुति ॥ पूजा ॥ ॐ ॥ उं ॥ मम सुलाय ॥ पंचनलता ॥ मूलं लूं लूं लूं लूं लूं पंच
नलं थो ॥ ॐ ॥ मितादि घटं ॥ नमः चन्द्रदिता ॥ मूलं नरे हव नरे ॥
॥ ॐ ॥ नृथानिमलमूद्रातालपुत्रयदिग्वन्धनं ॥ मूलं नृथानं ॥ अलि ॥ नमस्का
ना ॥ ॐ ॥ मिमूलपातुपूजा ॥ शिगपायादिमालका कृपणं ॥ मधूपर्क कृपणं
मान्नाद्येवता ॥ भूक्तयोगः ॥ ॥ तथा ज्ञानपूजा ॥ गुनगर्प्य ही सिनसि ॥ मूलं न

॥ सूर्य नमो भगवते वासुदेवाय ॥

सिनसिगुयां अलि ॥ ॥ तथा ककुनसाधनं ॥ मूलं नरे हव नरे ॥ ॐ ॥ विरहाय ॥ ॥
स्वदृष्टवतामावाहय ॥ मालनी ॥ पंचवलि ॥ ॐ ॥ धनं ॥ ॥ दवं मावाहय
॥ ॐ ॥ सन्नर्ग ॥ निधवपूजा ॥ ॥ तथा पी ॥ पूजा ॥ ॐ ॥ आधनं ॥ कृपदिता ॥ ॐ ॥
हीनं सिहासनाय ॥ ॐ ॥ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं नरे हव नरे पी ॥ मय ॥ ॐ ॥ मिपी
॥ पूजा ॥ ॥ धनं ॥ ॐ ॥ नकारं सूपसन्नं प्रितयनममृतान्मरुही घा रिनामंका
नृक्ष ॥ शिमी ही वनदमरय दं चन्द्रनरे वतं ही स्वध्वाना रिता सा प्रनिहति विर
धिनाभा समानान्मरुगवं ही ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं प्रितयनममृतान्मरुही घा रिनामंका
नृक्ष ॥ शिमी ही वनदमरय दं चन्द्रनरे वतं ही स्वध्वाना रिता सा प्रनिहति विर

ददयउ० नरगोश्वरवां० वाग्नि॥ उनुस्त्री व्याधिमृत्युः क्षनरवनखगध्वंवा
 गतिवगः॥ संहर्षासर्वकंसजयति क्षनरः॥ नुवपदिनाउः॥ मृगस्त्वद्दृष्टानामक्षप
 क्षायांचं वृत्तादिउ॥ अरुधवक्रध्वगुम्पादउ० इवक्रवसुर्गुजः॥ कालान्तदहना
 पम्पाधनकीमूरनिधनः॥ अनिष्टदहनादवविष्टुष्टवलविक्रमः॥ ॐ महा
 पद्मवनानकमृति॥ ॐ दवलिह कीति॥ ॐ ध्यानपूष्यं॥ ॥ गतादवमावाह
 य०॥ ॥ मूलं क्षनरध्वनरगानक० हागच्छ० ०० हतिष्ट० ०० हसं
 निनुक्षारव० ०० हसं निहितारव० अग्राधिसृष्टानंकूनूरममपूजांगहा
 क्ष०॥ ॥ गताप्राधप्रतिष्ठा॥ ॐ आं कीं कोहंसः साहं क्षनरध्वनध्वनस्य

प्राक्षसर्वं त्रियासि० हागयसुखं विनंतिष्टनुस्वा॥ रूतसादीपदानसंश्रयाथ
 वायमरुतसामिप्रयार्थयायइला॥ ॥ मूलिन० क्ष० धनं० ०० अवगुष्ठनं० धन
 प्रिष्टूलगतप्रयदिग्वन्धनं॥ ॥ पाशादि॥ मूलं क्षनरध्वनाय० दमासनमा
 मां॥ मूलं क्षनरध्वनरकानकाय० दमासनं॥ कापगजसम॥ प्रवंपाशं
 नमः॥ ०० दमर्धस्वाहा॥ ०० दमधूपर्वस्वधा॥ ०० दमावमनीयं० ०० द
 तानीयं नमः॥ ॥ प्रवंचन्दनसिन्दूनाङ्गयक्षापवीतकवमुलंकार
 नपूष्यं निवदय० धूपदीप॥ मेवय० रूतपकान० वंउन० रूतित्तादि
 सर्वप्रथोवय० ॥ कृगुयामन॥ ॥ प्रयाउरुति॥ ॐ खैखौखं रुद्रप्राधाय

हसिप्राणाग्रहसिद्धं रुद्र सर्वशक्रसंहारनक्षायहानरुद्रालुवायपदिनाऊ
 यद्वैरुद्रस्वाहा॥ श्रीगणेश्वनरुद्रानकायपापू॥ ३॥ वलि॥ ॐ गणेश्वर
 नायसर्वशक्रसंहारनक्षायसमासूकशक्रनामय॥ अमूकशक्रपशुचलि
 स्वनगृह्ण॥ वाहि॥ रुद्रस्वाहा॥ प्रियलमूद्रा॥ ॥ सागुकात्यासकुमसमाह
 कादनेमूलमनुसंप्रतिभनपूजयथा॥ वलिंच॥ हृदयादिप्रउंग
 हापूजय॥ वलिंच॥ ॥ नारायणनिवानपूजा॥ प्रियका॥ ॐ वन्द्याय॥
 ॐ सूर्याय॥ ॐ महावंशाय॥ वलि॥ प्रियानां॥ शुद्धिदः॥ ॐ रुद्र

३१

वाय॥ ॐ वातवाग्नय॥ ॐ दूर्गाय॥ ॐ कालिकाय॥ वलि॥ ॥ अ
 रुद्रल॥ ॐ वृन्द्याय॥ ॐ अग्नय॥ ॐ यमाय॥ ॐ नैऋतय॥ ॐ
 वनूसाय॥ ॐ वायव॥ ॐ कूर्वाय॥ ॐ वृक्षनाय॥ वलि॥ ॥ प्रि
 का॥ ॐ व्याधय॥ ॐ मृतव॥ वलि॥ ॥ दादहादल॥ ॐ म
 दनाय॥ ॐ नकचामुसुय॥ ॐ मोहिनेय॥ ॐ प्राविरुप॥ ॐ हाया
 कर्षिरुप॥ ॐ अपर्णुय॥ ॐ नमाय॥ ॐ मायाय॥ ॐ पुलिनु॥
 ॐ मदनाय॥ ॐ हाकु॥ ॐ संक्षारि॥ वलि॥ ॥ पादहादला॥ ॐ

ABHA ARCHIVES 3516



43

॥ १०८० ॥

॥ १०८० ॥

॥ हंसपादयाहामरचग्व १ लं खसनि स्मं कापतसपोचि स्मं काससधनकनि
स्मं ॥

गणेशभक्त्या य

वक्रराशः॥ॐ नानायनाय॥ॐ विंध्य॥ॐ मायाय॥ॐ वनाहाय॥
 ॐ पृथिवी॥ॐ विशाय॥ॐ राषाय॥ॐ अहिने॥ॐ वीनरुडाय॥
 ॐ रंगानिताय॥ॐ रानय॥ॐ निवाय॥ॐ हिकनाय॥ॐ नूदाय॥ॐ
 वलि॥ ॥प्रथमरूप॥ॐ अकनाके कधनपूर्वकंचपूज्य॥वलि॥ ॥
 दिदूः॥ॐ गल्लाय॥ॐ मायाय॥ॐ स्कंजय॥ॐ रैनवाय॥व
 लि॥ ॥विदिदू॥ॐ त्वनिताय॥ॐ वीनाय॥ॐ वजवाय॥
 ॐ महामायाय॥वलि॥ ॥वास्तवपूजिदू॥ॐ वक्राशयमारु
 कासंपूज्य॥वलि॥ ॥पवित्रः॥ॐ कंजाद्रवी॥ॐ खंगलपतय॥ॐ गं

कालान्तरयन

रैनवाय॥ॐ कालाय॥ॐ रंदाय॥ॐ वं धनदाय॥ॐ रंयमाय॥
 ॐ काल्यै॥ॐ अं आगवदस॥ॐ रं निर्विकलाय॥ॐ रं अं नानीधना
 य॥ॐ रं प्रनमानाय॥ॐ रं पृथिवी॥ॐ रं वदाय॥ॐ रं हं कुलाय॥ॐ रं
 विष्णवे॥ॐ रं वलरुदाय॥ॐ रं दंपनाय॥ॐ रं धं दुर्गाय॥ॐ रं
 धर्माय॥ॐ रं विकल्माय॥ॐ रं अं अग्निरेनवाय॥ॐ रं वं वं दुदयाय
 ॥ॐ रं अं अहिने॥ॐ रं मं रंगवतीधनाय॥ॐ रं वायुवे॥ॐ रं हं हानव
 ॥ॐ रं लं कुलाय॥ॐ रं वं वनूसाय॥ॐ रं सं हिकनाय॥ॐ रं दं ददशादिप्राय
 ॥ॐ रं मं अनूरागताय॥ॐ रं हं सदा निवाय॥ॐ रं ॥ॐ रं नृसिंहाय॥

शक्रं प्रणम्य नमः ॥ १ ॥ स्वाहा ॥ २ ॥ गुरु ॥ ३ ॥ ह्रीं ॥ ४ ॥ स्वाहा ॥ ॥ पूनः मन्त्रः ॥
 नमः ॥ पूजा ॥ ॐ हं हं हं मित्रादिमन्त्रः ॥ पूजावलि ॥ ॥ गतः समस्ति पूजा ॥
 ॥ ॐ त्वं सर्वं यसां गत्य सगता प्रनिवान्त्यसा यथा यसां चराय श्री ॥
 नमः ॥ धनं रत्नं नकं श्री पाप ॥ ३ ॥ वलि ॥ ॥ मन्त्रान्नमः मन्त्रा पूजा ॥ नमः ॥
 ॐ सदा शिवं नमः ॥ ॥ गिनमः ॥ ॥ ग्यादि मन्त्रा स पूर्व गान्तः कनांगन्यासः ॥
 ॐ ज्ञां ज्ञां हं मगुष्ट्यान्तमः ॥ ॥ ग्यादिकनांगन्यास सर्व पूर्ववत् ॥ ॥ ध्यानं ॥
 ॐ नकारं स सन्नं प्रियाय नमः ॥ मन्त्रान्मन्त्राणां चारिनामं कान्त्राणां धिमीर्गवन
 दमभयं चन्द्रनखावगं ॥ ॥ श्री स्वध्याना रिलासा प्रतिहति विधिना एव समाप्ता ॥
 ॥ ३ ॥

[illegible]

पंचापचामेसंपुत्र॥धूपदीपनेवअलुधनाफलमूलनामूलप्रणानिधूपदीप
 नेवअफलंक्षेत्ररक्षनायनमः॥समर्प्यसमम्भु॥॥गुणोक्तलि॥ॐक्रोक्रोहंयं
 नैवैतंस्मृतंरघोद्यंतिॐरंवीनरद्रखरखशिखरखं॥त्वकसेकटप्रचर॥ॐ
 रय२घोनानुसंहानय२दुष्टान्दम२खरखपदिनाजायरुद्र३स्वाहा॥१
 श्रीक्षेत्ररक्षनरक्षकपाप॥३॥वलि॥॥गतःपनिवानपूजा॥ॐवन्द्याय
 नमः॥ॐवंसूर्यायेःरेनवाय॥वलि॥॥त्रिकारक्ष॥ॐदुर्गाय२॥ॐकाली
 नमः॥वलि॥॥त्रिकारक्षपार्वथाः॥॥अष्टदल॥ॐवन्द्याय२॥ॐअग्नि
 य२॥यमाय॥नेत्रगतय॥वनूक्षाय॥वायव॥कृवनायनमः॥ॐक्षेत्रनाय२॥वलि

हाद॥दल॥ॐमदनाये२॥ॐवंसूर्याये२॥माहिन्नेऽविह्येःसर्वकर्षि
 शिवायेःवाक्षेःनमायेःभामायेःपुनिहिन्नेःसम्रायेःशारिन्नेःअष्टाय
 ॥वलि॥॥षाद॥दल॥ॐवन्द्याय२॥ॐवंपनायेःविस्कराय॥मायायेः
 वानायेःपृथिव्येःवन्द्याय॥शिवायेःअष्टिभःवीनरद्राय॥रानयेःशिवायेः
 संकनायेःनूद्राय॥कालाग्नय॥नूद्रायनमः॥वलि॥॥प्रथमरपुना॥ॐगरक्ष
 णाय२॥उमायेःरेनवाय॥वीनरद्राय॥वाजवाग्नय२॥माहमायाये२॥वलि
 ॥वायव॥पुन॥ॐवन्द्याय॥दिमातृपू॥॥अष्टकारक्ष॥ॐवन्द्याय२॥ॐ
 ओंक्रो२॥ॐगरक्षाय२॥ॐरेनवाय२॥ॐकालाय२॥ॐरद्रकाय२॥१

ॐ कामवदसः॥ ॐ अर्द्धनामीध्वनायशिवलि॥ ॥ निमं पूज॥ ॥ धनदीपदान
 शलसादीपपत्रसाधनयाशिवलिवियथसालाज्जादिलिङ्ग॥ ॥ पात्रादि॥ चन्द
 नादि॥ धूपदीपनेत्रदानेदत्वा दीपराक्षसंस्नानं कुर्यात् ॥ गतानकचूर्ण
 क्षरभोयन्तुमालिख्यतत्पत्रं कृतदूलं निधाय पूज्यं वा ॥ ततः मृत्तिकादिपात्रनि
 र्मिर्गत्रिकाक्षानदीपराक्षसंस्नानं प्रहाउयता ॥ अर्धजलनपात्रप्रहात्वा रु
 द् ॥ चतुस्मवन्दनं लपय ॥ वषट् ॥ धूपयित्वा ॥ ह्रीं ॥ रगाद्युतं निधाय अम्बु
 यरुद ॥ ज्वगुं वनं ॥ ह्रीं ॥ गालप्रय ॥ अम्बुयरुद ॥ ३ ॥ दिगन्धनं ॥ रुद ॥ १० ॥
 धनमूत्रा ॥ नै ॥ ॥ गताग्निहोत्रात्पद्मिदीपं प्रहात्वा लनमक्तुः ॥ नै ॥ जनां नी ॥ नै ॥

मूर्तिदीपं प्रहात्वा लय ॥ ह्रीं रुदस्वाहा ॥ ॥ मूलमक्तुक्षदीपराक्षुनिधाय ॥ ग
 त्रुदिपदवतासानिधाय कुर्यात् ॥ मूलं ॥ क्षानरक्षधनरक्षानकदवतान्दीप
 सानिधाय कुर्यात् ॥ मूलं ॥ क्षानरक्षधनरक्षानकदीपस्वनूपउगुनूप
 सर्वभागं नाक्षय ॥ सोख्यं दहि ॥ विपद्भिन्नाक्षय ॥ मनानथान्साधय ॥ म
 मक्षग्रन्थाटय ॥ ममक्षग्रन्थं गृह ॥ नमक्षग्रन्थासय ॥ खाहि ॥ नै ॥ कीं ह्रीं
 रुदस्वाहा ॥ ॥ सामान्यार्थजलनार्युदाभुसावगुहं नै ॥ धनमूत्रा ॥ गालप्रय ॥ ३
 दिगन्धनं ॥ १० ॥ ॐ ॥ निदीपस्थापनं ॥ ॥ गतामूलकनांगं न्यासकृत्वा मातृ

हृदयादिदक्षिणपाद॥ॐ प्रेमज्ञात्मने॥ हृदयावामपाद॥ॐ ह्रीं शुक्लात्म
 ने॥ हृदयादिदक्षिणपादो॥ॐ ह्रीं प्राप्तात्मने॥ हृदयावामपादो॥ॐ
 कीं क्रीं क्रीं धात्मने॥ हृदयादिनारिपर्यन्तं॥ ॥ ध्यानं ॥ नकाभ्यां
 धिष्ठपागान्तरुसदनसनाजाधिरुं कनारुः पाष्ठाक्षदक्षुमिद्वह
 वमसिगुलस्य दूर्ध्वं पंचवाहं विद्याक्षमकपालं त्रिनयनलसितापीन
 दक्षीणहस्त्यादवींवालाकवर्धुं रवगुणुरवनी प्राक्षक्षकिपनासः ॥ॐ
 कीं क्रीं क्षकिमधायै॥ ॐ कीं क्रीं धर्यै॥ ॐ कीं क्रीं धर्यै॥ ॐ कीं क्रीं सिद्ध्यै॥
 ॐ कीं क्रीं वृद्ध्यै॥ ३ मृद्ध्यै॥ ३ उं धर्यै॥ ३ सनस्वत्यै॥ ॥ गुरुपनिप्राक्षप

गिर्या॥ ॐ कीं क्रीं यं नलं वं ह्रीं प्रेमं ह्रीं क्रीं माहं ह्रीं सः क्षनरुध्वनस्य प्राक्षरु ह्रीं
 तः॥ ॐ कीं क्रीं वृद्धक्षनरुध्वनस्य कीवर्धु ह्रीं तः॥ ॐ कीं क्रीं वृद्धक्षनरुध्वन
 स्य सध्वनिय्यासि॥ ॐ कीं क्रीं वृद्धक्षनरुध्वनस्य वाद्यनानयरात्रध्वद्व
 जिक्वाद्याक्षप्राक्षप्राक्षरु हागत्यसुखं चितं तिष्ठनु स्वाहा॥ ३॥ ॐ क्रीं क्रीं क्रीं
 र्मां क्रीं ॐ प्राक्ष आगच्छ स्वाहा॥ ३॥ ॥ मूलमनुक्षक्षनं वासहसं वारक्ष
 धय॥ नगालस॥ अंजलीवद्वकीवलि क्षमा॥ ॐ कीं क्रीं प्राक्षीदहितथा
 किवमायुन्दे हि सुखं धनं॥ विद्याक्षानसुखं दक्षीदहिमलघुसास्यतम्
 ॥ॐ ॐ कीं क्रीं मम कीवात्मलीनं रुद्र॥ मूलकवायुनास्वकीवाकर्षणी॥ ॐ

प्रमिष्टा॥ॐ जावहावनि॥ ॥वेदार्चनं॥ ॥उपसंकल्पं कृत्वा॥ सदा बुद्धि
 निवृत्ताय पदवि विद्वि फलदरा॥ भूषपादाय नूदाय नमः क्षान्दमूर्द्धय
 ॥नमस्तुभ्य उपत॥ गुण॥ उपवा नय॥ १०८॥ उपसर्पनं॥ ॐ गुक्रानिगु
 क्रान्ति॥ ॐ क्षान्दमूर्द्धय नय॥ ॐ उपगुहः स्वाहा॥ ॥मधुलसुपु॥ ॐ
 विरुति॥ ॐ कृष्णसंवदुकति॥ ॐ दवाधिदवाय उगन्मयाय शिवाय नार
 तीकनिराननाय॥ सवर्षी माक्षानाधिपाय नमस्तुभ्यं क्षान्दमूर्द्धय नय॥ १॥
 ॥रुपादिना सर्वन्त॥ १॥ कवचादिभ्यां गुं रुकायाय॥ ॥पशुविसर्जनं॥ नेव अ
 क्रय॥ ग्वावच्छाय॥ गताकोमानी पूजनं यथा विधिना॥ मधुलसुपुष्पस्पर्शं

॥दक्षिणा॥ ॥गर्पशी॥ ॐ याव्यक्रि॥ प्रीतिप्रति॥ आत्मसमयकार्यगु॥ ॐ
 प्रीतिप्रति॥ ॥दवाशीर्वाद॥ नृकानकति॥ कलशासीर्वादस्वस्वमन्त्रक्षमगुह
 ॥यासीर्वाद॥ ॥आत्माशीर्वादं॥ ॐ अम्बपूर्वगति॥ कलशादिसगुह
 ॥आशीर्वादस्वस्वमन्त्र॥ ॥शीघ्रदिविसर्जनं॥ संवर्द्धति॥ गर्पशी॥ वीज उ
 नगर्पशी॥ ॥त्पामलिकाय॥ कीमानिविसर्जन॥ ॥मूलपादिसगर्पशी॥ ॥
 मूलपादिसायनं प्रियामयित्वा किचिद्यन्त्रनिधाय॥ ॐ मूलं क्षान्दमूर्द्धय नर
 क्षानकाय प्रप्रादुषार्धस्वाहा॥ ॥हृदि मन्त्रक्षदवालीनं स्वददथ॥ ॥
 संहानमूद्रया वलिदवविसर्जनं॥ यन्त्रसुपुष्पं गृहित्वा हृदि शिनिप

श्रीविष्णुः प्रानयन् ॥ तत्पूज्यं ॥ नारायणनिधाय पूजयन् ॥ ॐ वरसुख
 नाय ॥ ॥ वलिसमग ॥ ॥ सूर्यसादि ॥ यत्तु यद्विनि ॥ चनेः ॥ दकोपि
 तु ॥ गंग ॥ पूषभति ॥ ॥ कीमानिपी ॥ सच्छाय ॥ विनाचमनं ॥ ॥ सर्ववर
 लिखं देहत्वा निर्माल्यं पूजय ॥ ॥ चन्दनादि आत्मसमयरा अकलं
 कोनं देहत्वा यथासुखं विनह ॥ ॥ ॐ गिहानरश्च न स्वल्पदीपदा
 नपद्मसिमाफाः ॥ ॥ सम्वतरे ॥ कार्तिक शुक्ल ॥ नाजवतदिन ॥
 श्रीवाग्पतिना आ पाध्याय नललितपत्तनवकनि धनानि धूर्वा
 थागृहस्थितनलधितमूषुरम् ॥ ॥ श्रीगानरश्च न सुप्रसेनाम् ॥

अथ यत्तु पूजाक्रममुदिव्यान्धयकं प्रहस्य रस्मनि ॥ त्रिकाक्ष ॥ दलदा
 दलदलधादलदलरूपनद्वंद्वकं अनकिमातुंचक्र ॥ मूर्ध्ममरध्याद
 वमावाहय ॥ ॐ गियन्तु ॥ ० ॥ अथ द्विचत्वाविंशद्वर्षस्य ध्यानं ॥ अष्टा
 धिसहस्रवाहननलादगुणिनायुगमरतु ॥ द्विपक्षानि उवा द्विपक्ष उ
 दितः साक्षान्नुसिंहासनः ॥ नूडक्ष ॥ पिमृगाकृतिः पूननरक्षपदक्षपक्ष
 कृति ॥ श्रीनूडः ॥ गानरः सपागुनूचिनं नीत्वा सदा मां हृदि ॥ ॐ गितनक्षक
 नो ॐ मंमन्तु स ह्युजपक्ष सिद्धिः ॥ दक्षां गहामः ॥ ॥ ॥ अन्यच्च ॥ नत्तां

सूप्रसंनंशिनयनममृतात्मगुणीषारिनामं कान्ध्याशधिरीर्षवनदमरयद्वं
 न्दभवावतेर्षा॥ संखंध्यानाखिलहाप्रतिहरविधिनारासमानात्स्वरावं स
 र्वेर्षाहालूवर्षाप्रक्षगरयहनंपदिनाऊंनमामि॥ चन्द्राकान्निप्रिप्रिद्विकुलि
 हावननखेधं चलात्पुगुकिहा॥ कालीदूर्गाचपक्षो हृदय ऊथनलोलेनवा
 वाउवाग्नि॥ उन्नक्तो व्याधिमृत्युः क्षनरवनखगधेन्द्रवागातिवगः॥ सेह
 र्गासर्वेर्षाकसऊयतिक्षनरः॥ हालूवपदिनाऊः॥ मृगस्त्वर्द्धक्षान्नक्षपक्ष
 र्याचंचूनादिऊ॥ अर्धवक्रुधतुः पादुर्द्धवक्रुचतुर्धुऊः॥ कालान्नदहनाम
 म्पाद्यनकीमृतनिधनः॥ अनिष्टदर्शनादवविष्टवृवलविक्रमः॥ ॐ तिथ्या

न॥ ॐ हं हं हामिग्यादि॥ ॐ ति

अथपनिवानपूजा॥ ॐ वन्द्याय २॥ ॐ सूर्याय २॥ ॐ ऐनवाय २॥ त्रिकाक्ष ॥ ॥
 (ॐ दूर्गाय २॥ ॐ काल्यै २॥ पार्व्यै ॥ ॥ अष्टदला ॥ ॐ वन्द्याय २॥ ॐ अग्नये २
 (ॐ यमाय २॥ ॐ नैऋतये २॥ ॐ वनूत्याय २॥ वायवे २॥ ॐ कूवनाय २॥ ॐ ॐ ॥

